PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 3, ISSUE 3

प्रेमचन्द की कहानियों में वर्णित नारी का स्वरुप

रीना अग्रवाल
सहायक प्रोफसर (हिंदी विभाग)
जनता विद्या मंदिर,
चरखी दादरी **हरियाणा भारत**

हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का सार एवं प्रकाश हो – जो हममें गति, संघर्ष और बैचेनी पैदा करें, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है। (प्रेमचन्द, प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में दिए गए अध्यक्षीय उद्‌बोधन का अंश)

प्रेमचन्द न केवल हिन्दी अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के कथाकारों में सर्वोपरि स्थान के अधिकारी हैं। वे कहानी लेखन के क्षेत्र में अप्रतिम रचनाकार माने जाते हैं। आदर्शवादी होने के बावजूद उन्होंने यथार्थ की जैसी समुचित स्थापना की है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। इनके कारण ही हिंदी कहानी लेखन को स्वतंत्र एवं मौलिक व्यक्तित्व प्राप्त हुआ।

भारतीय नारी के सम्बन्ध में प्रेमचन्द की दृष्टि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' की धारणा की विरोधी कदापि न थी, किन्तु इसके पीछे छिपी संकीर्णता में वे सिमटे नहीं थे। जीवन के यथार्थ एवं समकालीन सामाजिक रूढ़ियों तथा परम्पराओं में जकड़ी नारी के प्रति उनकी संवेदनाएं देशकाल के अनुरुप और प्रायः उनकी सीमाओं से परे निकलकर बहुत कुछ ऐसा देती रहीं जो अनुसंधान चिंतन को भी चौकाने में समर्थ है। प्रेमचन्द का

क्रांति दृष्टा वैचारिक चिंतन नारी जीवन के हर रुप को आककर प्रस्तुत करता रहा है। नारी मन के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव भी उनके लिए अनदेखे नहीं रहे। उन्होंने युगीन नारी के करुण क्रन्दन की भली भांति सुना, उसके ऊपर होने वाले अत्याचारों को देखा। सृष्टि का निर्माण करने वाली नारी को आँसुओं के घूट पीते देख वे व्याकुल हो उठे और उनकी लेखनी पतिता नारी में नारी गरिमा का दर्शन करने लगी। उन्होंने न केवल नारी की कारुणिक स्थिति का चित्रण किया अपितु उन परिस्थितियों से जूझती जुझारू नारी को भी हमारे समक्ष रखा।

प्रेमचन्द बेमेल विवाह के विरोधी थे और ये विवाह स्त्री जीवन में क्या–क्या समस्याएँ लेकर आते हैं इसका यथार्थ चित्रण 'नरक का मार्ग' और 'नया विवाह' कहानियों में सफलता से किया गया है। सुशीला जो एक सुन्दर, सुशील और सुघड़ युवती है उसका विवाह एक बूढ़े से हो जाता है। वैवाहिक सुख की प्राप्ति न होने के कारण पति की मृत्यु के बाद सच्चे प्रेम की तलाश में वह घर छोड़कर निकल पड़ती है किन्तु पाप की गर्त में जा गिरती है। वह अपनी दुर्दशा के लिया अपने पति और पिता को जिम्मेदार ठहराते हुए अपना दुख व्यक्त करती हुयी कहती है। ''कभी–कभी मुझे बेचारे पर दया आती है। यह नहीं समझते कि नारी जीवन में कोई ऐसी वस्तु भी है जिसे खोकर उसकी आँखों में स्वर्ग भी नरक तुल्य हो जाता है।''[1] नया विवाह की आशा अपने से काफी बड़ी उम्र के पति को पाकर खुश नहीं है। वह अपने धर्म को निभाना जानती है किन्तु यौवन की उद्दाम आकांक्षाएं उसे घर के नौकर के प्रति आकर्षित कर देती हैं। जब जुगल आशा के रूप सौंदर्य की प्रशंसा करता है तो उसका मन उमंग से भर उठता है। वह सोचती है ''लाला डंगामल ने असंख्य बार आशा में रूप और यौवन की प्रशंसा की थी मगर उनकी प्रशंसा में उसे बनावट की गंध आती थी। वह शब्द उनके मुख से निकलकर कुछ ऐसे लगते थे जैसे कोई पंगु दोड़ने की चेष्टा कर रहा हो। जुगल के इन सीधे शब्दों में एक उन्माद था, एक चोट थी। आशा की सारी देह प्रकाशित हो गयी।''[2]

सौत कहानी में लेखक ने गोदावरी के रूप में एक ऐसे चरित्र की उद्भावना की है जो प्रेम, त्याग, बलिदान के साथ–साथ स्त्री सुलभ ईर्ष्या से भी भरी हुई है। औलाद की

चाह में वह अपने पति का दूसरा विवाह कराकर सबकी नजरों त्याग की मूर्ति तो बन जाती है किन्तु सौतन के घर आने पर द्वेष व ईर्ष्या के भाव भी हृदय में जागने लगते हैं। जब वह अपने ही पति को अपनी सौत के संग देखती तो बैचेन हो जाती, ''उसके हृदय में एक ओर गोमती के प्रति ईर्ष्या की प्रचण्ड अग्नि दहका देती, दूसरी ओर पण्डित देवदत्त पर निष्ठुरता और स्वार्थप्रियता का दोषारोपण करती।''[3]

प्रेमचन्द की कहानियों में नारी का बहु आयामी वर्णन मिलता है। जहाँ एक ओर गोदावरी, आशा जैसे चरित्र है जो अपनी ही दुर्बलताओं से घिरे हैं तो कुसुम, रामप्यारी, सुभद्रा जैसे चरित्र भी हैं जो जीवन संघर्षों पर विजय प्राप्त करती है। कुसुम प्रेम एवं साहस की जीवन्त रूप है जिसका विवाह पढ़े–लिखे सुंदर युवक से होता है किन्तु दहेज में नगद रुपये न मिलने के कारण कुसुम का परित्याग कर देता है और जब कुसुम को यह पता चलता है कि उसके पिता पैसे देने को तैयार है तो वह उसका विरोध करते हुए कहती है – ''जो आदमी इतना स्वार्थी, इतना दंभी, इतना नीच है उसके साथ मेरा निर्वाह न होगा। मैं कहे देती हूँ वहाँ रुपये गए तो मैं जहर खा लूंगी।''[4]

'सोहाग का शव' कहानी की नायिका सुभद्रा भी अपने पति द्वारा धोखा दिए जाने पर रोती गिड़गिड़ाती नहीं अपितु अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करती है। जब उसे पता चलता है कि लन्दन जाकर केशव किसी अन्य लड़की से विवाह कर रहा है तो वह उसका विरोध नहीं करती अपितु उस परिस्थिति में भी स्त्री जन्य सारी दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करती है। वह कहती है ''क्या पुरुष हो जाने से सारी बातें क्षम्य और स्त्री हो जाने से सभी बातें अक्षम्य हो जाती हैं।''[5]

नारी के विद्रोही रुप के साथ–साथ प्रेमचन्द में प्रेम, त्याग एवं स्वाभिमान से पूर्ण नारी को भी हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। दूजी के रुप में लेखक ने एक ऐसे चरित्र को उभारा है जो प्रेम एवं कर्त्तव्य दोनों का समान निर्वाह करती है। वह अपने प्रेमी की हत्या किये जाने के आरोप में अपने भाईयों को जेल करवा देती है और दूसरी और अपने भाईयों के प्रति अपने कर्त्तव्य निर्वाह के लिए 14 वर्ष जंगल में रहती है और अंत में भाईयों से

मिलकर अपने प्राण त्याग देती है। 'माता का हृदय' कहानी में माधवी अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए उसकी मृत्यु के लिए जिम्मेदार पुलिस अफसर के घर काम करने लगती है किन्तु उसके छोटे से बालक के मोह में इतनी वशीभूत हो जाती है कि अपना बदला भूल उस पर अपनी ममता लुटाने लगती है और उसकी मृत्यु पर फूट–फूट कर रोने लगती है। जिसका वर्णन करते हुए प्रेमचन्द जी कहते हैं – ''माता का हृदय दया का आगार है। उसे जलाओ तो उसमें दया की ही गंध निकलती है। पीसो तो दया का ही रस निकलता है। यह देवी है। विपत्ति की क्रूर लीलाएँ भी उस स्वच्छ निर्मल स्रोत को मलिन नहीं कर सकतीं।''[6]

'स्वामिनी' कहानी की नायिका रामप्यारी भी अपने पति की मृत्यु के बाद टूटती बिखरती नहीं अपितु सारे घर का दायित्व अपने कंधों पर लेकर अपना सब कुछ परिवार पर समर्पित कर देती है। रामप्यारी के रुप में एक ऐसे चरित्र की सृष्टि लेखक ने की है जो सामान्य होते हुए भी विशिष्ट है जिसके विषय में लेखक कहता है – 'एक–एक करके प्यारी के गहने उसके हाथों से निकलते जाते थे। वह चाहती थी मेरा घर गांव में सबसे सम्पन्न समझा जाए। कभी घर की मरम्मत के लिए, कभी बैलों की नई गोई खरीदने के लिए, कभी नातेदारों के व्यवहारों के लिए, कभी बीमारों की दवा दारु के लिए रुपयों की जरूरत पड़ती रहती और वह अपनी कोई न कोई चीज निकाल देती।''[7]

इस प्रकार प्रेमचन्द की कहानियों में नारी का प्रत्येक रुप हमारे समक्ष साकार हो उठी है। कहीं वह स्त्री सुलभ दुर्बलताओं से घिरी दिखाई देती है तो कहीं सारी दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करती हुई। कही उसके चरित्र में अग्नि की प्रचण्डता है जो कहीं जल भी भांति शांति व निर्मलता। कहीं वह आतातायियों का विरोध करने के लिए चण्डी का रुप धारण करती दिखाई देती है तो कहीं ममता की मूर्ति बन अपना सर्वस्व न्योछावर करती हुई।

संदर्भ

1. भारतीय नारी जीवन की कहानियाँ, प्रकाशक, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, नरक का मार्ग, मुंशी प्रेमचन्द
2. वही, नया विवाह, मुंशी प्रेमचन्द
3. वही, सौत, मुंशी प्रेमचन्द
4. वही, कुसुम, मुंशी प्रेमचन्द
5. वही, सोहाग का शव, मुंशी प्रेमचन्द
6. वही, ममता, मुंशी प्रेमचन्द
7. वही, स्वामिनी, मुंशी प्रेमचन्द